व्यवसायिक अर्थशास्त्र (Business Economics) की प्रकृति को निम्नलिखित बिंदुओं में हिंदी में समझाया जा सकता है—

1. व्यवहारिक (Applied) विज्ञान

व्यवसायिक अर्थशास्त्र एक व्यवहारिक विज्ञान है क्योंकि यह आर्थिक सिद्धांतों का उपयोग वास्तविक व्यावसायिक समस्याओं को हल करने में करता है।

2. सूक्ष्म अर्थशास्त्र पर आधारित

यह मुख्य रूप से सूक्ष्म अर्थशास्त्र (Micro Economics) पर आधारित होता है, क्योंकि इसमें उपभोक्ता व्यवहार, लागत, मूल्य निर्धारण, उत्पादन आदि का अध्ययन किया जाता है।

3. निर्णय लेने में सहायक

व्यवसायिक अर्थशास्त्र प्रबंधकों को उत्पादन, मूल्य निर्धारण, निवेश, विस्तार आदि से जुड़े सही निर्णय लेने में सहायता करता है।

4. सिद्धांत और व्यवहार का संयोजन

इसमें आर्थिक सिद्धांतों और व्यावसायिक व्यवहार दोनों का समन्वय होता है, जिससे सिद्धांत व्यावहारिक रूप में उपयोगी बनते हैं।

5. प्रबंधन उन्मुख

यह प्रबंधन के दृष्टिकोण से कार्य करता है और लाभ अधिकतम करने तथा लागत न्यूनतम करने पर बल देता है।

6. बहुविषयक (Interdisciplinary)

व्यवसायिक अर्थशास्त्र में अर्थशास्त्र के साथ-साथ लेखांकन, गणित, सांख्यिकी और प्रबंधन जैसे विषयों का भी उपयोग होता है।

7. भविष्य उन्मुख

यह भविष्य की मांग, लागत और बाजार की परिस्थितियों का पूर्वानुमान लगाने में सहायक होता है।

8. लाभ अधिकतमकरण पर आधारित

इसका मुख्य उद्देश्य सीमित संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग कर लाभ अधिकतम करना होता है।

निष्कर्ष:

व्यवसायिक अर्थशास्त्र की प्रकृति ऐसी है जो आर्थिक सिद्धांतों को व्यावसायिक निर्णयों में लागू कर व्यवसाय को सफल बनाने में सहायक होती है।